JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S

ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI

जय भवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ, गेवराई संचलित (कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी ता.गेवराई जि.बीड)

- समाचार की परिभाषा
- समाचार अर्थ
- समाचार तत्व

समाचार की संरचना

- समाचार छ 'क' कार

समाचार लेखन की प्रक्रिया

समाचार के प्रकार

- समाचार के प्रकार

प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

हिंदी विभागाध्यक्ष

समाचार की परिभाषा

विषय कोई भी हो परिभाषाएं भांति भांति की और प्रायत: अपूर्ण हुआ करती है। ठीक यही स्थिति समाचार के विषय में भी है। जिस तरह समाचार पत्र में छपी हर चीज समाचार नहीं हुआ करती है, ठीक वैसे ही प्रत्येक घटना भी समाचार की शक्ल नहीं ले सकती है। किसी घटना की रिपोर्ट समाचार है जो व्यक्ति, समाज एवं देश दुनिया को प्रभावित करती है। इसके साथ ही इसका उपरोक्त से सीधा संबंध होता है। इस कर्म से जुड़े मर्मज्ञ विभिन्न मनीषियों द्वारा पत्रकारिता को अलग-अलग शब्दों में परिभाषित किए हैं। पत्रकारिता के स्वरूप को समझने के लिए यहाँ कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाओं का उल्लेख किया जा रहा है

:

पाश्चात्य चिन्तन

1.री सी हापवुड:- उन महत्वपूर्ण घटनाओं की जिसमें जनता की दिलचस्पी हा,ै पहली रिपोर्ट को समाचार कह सकते हैं।

2.विलियम जी ब्लेयर:- किसी सामयिक घटना का विवरण जिसका किसी समाचार पत्र के संपादकीय विभाग ने संपादन कर्मियों द्वारा चयन किया गया हो, क्योंकि वह पाठकों के लिए रुचिकर एवं महत्वपूर्ण है, अथवा उसे बनाया गया है।

3.हार्पर लीच:- और जान सी कैरोल समाचार एक गतिशील साहित्य है।

4.जान बी बोगार्ट:- जब कुत्ता आदमी को काटता है तो वह समाचार नहीं है परंतु यदि कोई आदमी कुतते को काट ले तो वह समाचार होगा।

5.जे जे सिडलर:- पर्याप्त संख्या में मनुष्य जिसे जानना चाहे, वह समाचार है शर्त यह है कि वह सुरूचि तथा प्रतिष्ठा के नियमों का उल्लंघन न करे।

इस तरह टूरी सी हापवूड एवं विलियम जी ब्लेयर घटना की रिपोर्ट, पाठकों की रुचि को महत्वपूर्ण माना है। हार्पर और जान ने जो साहित्य गतिशीलता लिए हुए उसे समाचार माना है। सामान्य से हटकर कुछ बात हो तो उसे समाचार मानते हैं जान बी बोगार्ट। जे जे सिडलर ने जिज्ञासा को शांत करने वाला कोई भी विषय जो नियम के दायरे में रहकर पाठकों तक पहुंचे उसे समाचार की कोटी में माना है।

भारतीय चिन्तन

1.डा. निशांत सिंह:- किसी नई घटना की सूचना ही समाचार है

2.नवीन चंद्र पंत:- किसी घटना की नई सूचना समाचार है।

3.नंद किशोर त्रिखा:- किसी घटना या विचार जिसे जानने की अधिकाधिक लोगों की रुचि हो समाचार है।

4.संजीव भवावत:- किसी घटना की असाधारणता की सूचना समाचार है

5.रामचंद्र वर्मा:- ऐसी ताजा या हाल की घटना की सूचना जिसके संबंध में लोगों को जानकारी न हो समाचार है।

6.सुभाष धूलिआ:- समाचार ऐसी सम सामयिक घटनाओ, समस्याओं और विचारों पर आधारित होते हैं जिन्हें जानने की अधिक से अधिक लोगों में दिलचस्पी होती है और जिनका अधिक से अधिक लोगों पर प्रभाव पड़ता है।

7.मनुकोडां चेलापति राव:- समाचार की नवीनता इसी में है कि वह परिवर्तन की जानकारी दे। वह जानकारी चाहे राजनीतिक, सामाजिक अथवा आर्थिक कोई भी हो। परिवर्तन में भी उत्तेजना होती है।

8.केपी नारायणन:- समाचार किसी सामयिक घटना का महत्वपूर्ण तथ्यों का परिशुद्ध तथा निष्पक्ष विवरण होता है जिससे उस समाचारपत्र में पाठकों की रूचि होती है जो इस विवरण को प्रकाशित करता है।

भारतीय विद्वानों ने समाचार की परिभाषा में लगभग एक सी बात कही है। डा. निशांत सिंह एवं नवीन चंद्र पंत ने नई घटना को समाचार माना है। नंद किशोर त्रिखा ने जिस घटना के साथ लोगों की रूचि हो उसे समाचार माना है। संजीव भवावत ने भी घटना की असाधारण की सूचना को समाचार माना है। रामचंद्र वर्मा ने घटना की सूचना जिसका लोगों से संबंधित हो को समाचार माना है। सुभाष धूलिआ ने सामयिक घटना, विचार जिसका अधिक से अधिक लोगों से संबंधित हो तो मनुकोडां चेलापति राव ने नवीनता लिए कोई भी विषय हो समाचार माना है जो परिवर्तन को सूचित करता है। केपी नारायणन ने निष्पक्ष होकर किसी सामयिक घटना को पाठकों की रूचि अनुसार पेश करना ही समाचार है। इस तरह विभिन्न विद्वानों ने समाचार की परिभाषा अपने हिसाब से दिया है।

समाचार का अर्थ

"**समाचार** किसी अनोखी या असाधारण घटना की अविलम्ब सूचना को कहते हैं,जिसके बारे में लोग प्रायः पहले कुछ न जानते हों,लेकिन जिसे तुरंत ही जानने की अधिक -से-अधिक लोगों में रुचि हो।" ... पर्याप्त संख्या में लोग जिसे जानना चाहे वह **समाचार** है। शर्त ये है कि वह सुरुचि तथा प्रतिष्ठा के नियमों का उल्लंघन न करे ।

सामाजिक जीवन में चलने वाली घटनाओं के बारे में लोग जानना चाहते हैं, जो जानते हैं वे उसे बताना चाहते हैं। यह जिज्ञासा का भाव मनुष्य में प्रबल होता है। यही जिज्ञासा समाचार और व्यापक अर्थ में पत्रकारिता का मूल तत्व है। जिज्ञासा नहीं रहेगी तो समाचार की भी जरूरत नहीं रहेगी। अपने रोजमर्रा के जीवन के बारे में सामान्य कल्पना कीजिए तो पाएंगे कि दो लोग आसपास रहते हैं और लगभग राजे मिलते हैं। इसके बावजूद वह दोनों जब भी मिलते हैं एक दूसरे को एक सामान्य सा सवाल पूछते हैं क्या हालचाल है? या फिर क्या समाचार है? इस सवाल को ध्यान से देखा जाए तो उन दोनों में एक जिज्ञासा बनी रहती है कि जब हम नहीं मिले तो उनके जीवन में क्या क्या घटित हुआ है। हम अपने मित्रों, रिश्तेदारों और सहकर्मियों से हमेशा उनकी कुशलक्षेम या उनके आसपास की घटनाओं के बारे में जानना चाहते हैं। यही जानने की इच्छा ने समाचार को जन्म दिया है।

इस जानने की इच्छा ने हमें अपने पास-पड़ोस, शहर, राज्य और देश दुनिया के बारे में बहुत कुछ सूचनाएँ प्राप्त होती है। ये सूचनाएँ हमारे दैनिक जीवन के साथ साथ पूरे समाज को प्रभावित करती हैं। ये सूचनाएँ हमारा अगला कदम क्या होगा तय करने में सहायता करती है। यही कारण है कि आधुनिक समाज में सूचना और संचार माध्यमों का महत्व बहुत बढ़ गया है। आज देश दुनिया में क्या घटित हो रहा है उसकी अधिकांश जानकारियाँ हमें समाचार माध्यमों से मिलती है।

विभिन्न समाचार माध्यमों के जरिए दुनिया भर के समाचार हमारे घरों तक पहुंचते हैं चाहे वह समाचार पत्र हो या टेलीविजन और रेडियो या इंटरनेट या सोशल मीडिया। समाचार संगठनों में काम करने वाल े पत्रकार देश-दुनिया में घटने वाली घटनाओं को समाचार के रूप में परिवर्तित कर हम तक पहुँचाते हैं। इसके लिए वे रोज सूचनाओं का संकलन करते हैं और उन्हें समाचार के प्रारूप में ढालकर पेश करते हैं। या यों कहें कि व्यक्ति को, समाज को, देश-दुनिया को प्रभावित करने वाली हर सूचना समाचार है। यानी कि किसी घटना की रिपोर्ट ही समाचार है।

समाचार शब्द अंग्रेजी शब्द 'न्यूज' का हिन्दी अनुवाद है। शब्दार्थ की „ दृष्टि से 'न्यूज' शब्द अग्रेंजी के जिन चार अक्षरों से बनता है उनमें 'एन', 'ई', 'डब्ल्यू', 'एस' है। यह चार अक्षर 'नार्थ' उत्तर, 'ईष्ट' पूर्व, 'वेस्ट' पश्चिम और 'साउथ' दक्षिण के संकेतक हैं। इस तरह 'न्यूज' का भाव चतुर्दिक में उसकी व्यापकता से है। अगर न्यूज को अंग्रेजी शब्द 'न्यू' के बहुबचन के रूप में देखा जा सकता है जिसका अर्थ 'नया' होता है। यानी समाज में चारों आरे जो कुछ नया, सामयिक घटित हो रहा है,उसका विवरण या उसकी सूचना समाचार कहलाता है। यहां उल्लेखनीय है कि कोई भी घटना स्वयं में समाचार नहीं होती है, बल्कि उस घटना का वह विवरण जो समाचार पत्रो या अन्य माध्यमो से पाठको या श्रोताओं तक पहुंचता है तो समाचार कहलाता है।

हिन्दी में भी समाचार का अर्थ भी लगभग यही है। 'सम' 'आचार' से इसे समझा जा सकता है। वृहत हिन्दी शब्दकोश के अनुसार 'सम' का अर्थ एक ही, अभिन्न, सृश, एक सा, बराबर, चैरस, जो दो से पूरा पूरा बंट जाए, विषम नहीं, पक्षपात रहित, निष्पक्ष, ईमानदार, सच्चा, साधारण है। 'आचार' का अर्थ चरित्र, चाल, अच्छा चाल चलन, व्यवहार, शास्त्रोक्त आचार, व्यवहार का तरीका है। और 'समाचार' का अर्थ होता है समान आचरण, पक्षपात रहित व्यवहार, बराबर का आचरण, जो विषम नहीं होगा। इस तरह वृहत शब्दकोश में साफ है कि सम का अर्थ एक समान, बराबर का है और आचार का अर्थ व्यवहार से है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो जो पक्षपात रहित इर्म ानदारी से सभी को एक सा समाज की चाल चलन, आचार व्यवहार को बांटे उसे समाचार कहा जाएगा।

समाचार के तत्व

समाचार के मूल में सूचनाएं होती है। और यह सूचनाएं समसामयिक घटनाओं की होती है। पत्रकार उस घटित सूचनाओं को एकत्रित कर समाचार के प्रारूप में ढालकर पाठको की जिज्ञासा को पूर्ति करने लायक बनाता है। पाठकों की जिज्ञासा हमेशा ही कौन, क्या, कब, कहां, क्यों और कैसे प्रश्नों का उत्तर उस समाचार में ढूंढने की कोशिश करता है। लेकिन समाचार लिखते समय इन्हीं प्रश्नों का उत्तर तलाशना आरै पाठकों तक उसके संपूर्ण अर्थ में पहुंचाना सबसे बड़ी चुनौती का कार्य होता है। समाचारों को लेकर हाने ेवाली हर बहस का केद्रं यही होता है कि इन छह प्रश्नो का उत्तर क्या है और कैसे दिया जा रहा है। समाचार लिखते वक्त भी इसमें शामिल किए जाने वाले तमाम तथ्यों और अंतर्निहित व्याख्याओं को भी एक ढांचे या संरचना में प्रस्तुत करना होता है।

समाचार के कौन कौनसे प्रमुख तत्व होते है

प्रेरक और उत्तेजित करने वाली हर घटना समाचार कहलाती है। जब किसी घटना, विचार और समस्या से जब समाज के बड़े तबके का सरोकार हो तब हम कह सकते है वह खबर बनने योग्य है लेकिन किसी घटना, विचार और समस्या के समाचार बनने की सम्भावना तब बढ़ जाती है जब उसमें यहाँ बताये गये तत्व शामिल हों।

1. नवीनता

कोई भी घटना जितनी न्यू होती है इसलिए वो news बनती है। मतलब घटना जितनी नवीन यानि तत्काल, हाल ही में घटित होती है, उसके समाचर बनने की उतनी ही ज्यादा सम्भावना बढ़ जाती है। कहने का मतलब ये है की समाचार वही है जो ताजा घटना के बारे में जानकारी देता है इसलिए किसी भी समाचार के लिए नवीनता उसका पहला तत्व हैं।

2. निकटता

हर समाचार महत्त्व काफी हद तक उसकी स्थानीयता से होता है, क्योंकि पाठक उस समाचार को पढ़ने में विशेष रुचि दिखाते है जो उनके पास का होता है। यही कारण है की पाठक अपने शहर और अपने आसपास के क्षेत्रों के अलावा अपने राज्य और देश के अन्दर क्या हुआ, यह जानने को विशेष रूप से उत्सुक रहते है। इतना ही नहीं, सांस्कृतिक निकटता के कारण विदेशों में बैठे पाठक भारतियों से जुड़ी घटनाओं को भी जानना चाहते हैं।

3. प्रभाव

जब किसी घटना के प्रभाव से उसका समाचारिय महत्त्व निर्धारित होता है। घटित घटना की तीव्रता का अंदाज इस बात से लगाया जाता है की उससे कितने सारे लोग परभावित हो रहे है या फिर कितने बड़े भू-भाग पर इसका असर हो रहा है। इससे उसके समाचार बनने के चांस उतने ही ज्यादा बढ़ जाते है जैसे सरकार के किसी निर्णय से प्रभावित होने वाले लोगों की संख्या 100 के करीब है तो वह उतना बड़ा समाचार नहीं है, जितना की उससे लाभान्वित होने वाले लोगों की संख्या अगर एक लाख हो।

4. जन रुचि

किसी घटना या समस्या के समाचार बनने के लिए यह भी जरुरी है की लोगों की उसमें दिलचस्पी हो। जब पाठकों का एक बड़ा तबका उसके बारे में जानने में रुचि रखता हो तो वह घटना या समस्या एक महत्त्वपूर्ण रूप में समाचार बन जाती हैं।

5. संघर्ष या टकराव

किसी घटना में संघर्ष या टकराव का पहलू होने पर उसके समाचर के रूप में चयन की सम्भावना बढ़ जाती है, क्योंकि लोगों के मन में संघर्ष या टकराव के बारे में जानने की स्वाभाविक दिलचस्पी होती है। इसकी वजह यह है की संघर्ष और टकराव का उनके जीवन पर सीधा असर पड़ता हैं।

6. महत्त्वपूर्ण लोग

मशहूर और जाने-मने लोगों के बारे में जानने की आम पाठकों में स्वाभाविक इच्छा होती है। कई बार किसी घटना से जुड़े लोग के महत्वपूर्ण होने के कारण भी उसका समाचारिय महत्त्व बढ़ जाता है। जैसे प्रधानमंत्री को जुकाम भी हो जाए तो यह अपने आप में एक खास खबर होती है।

7. अनोखापन

अनहोनी घटनाएँ समाचार होती है क्योंकि लोग उनके बारे में जानना चाहते है। उदाहरण के लिए किसी विचित्र बच्चे के पैदा होने की घटना एक अच्छा समाचार बन जाता हैं।

8. उपयोगी जानकारी

बहुत सी ऐसी सूचनाएं भी समाचार मानी जाती है जिनका समाज के किसी विशेष तबके के लिए खास महत्त्व हो सकता है। जैसे स्कूल कब खुलेंगे, किसी खास कालोनी में बिजली कब तक बंद रहेगी आदि। ऐसी सूचनाओं का समाचार के रूप में हमारे रोजमर्रा के जीवन में काफी उपयोग होता है इसलिए उन्हें जानने में पाठक वर्ग की सहज दिलचस्पी होती हैं।

9. पाठक वर्ग

पाठक वर्ग ही तो किसी भी खबर के महत्त्व-अमहत्त्व का निर्धारण करता है। इसलिए समाचार के संगठन ख़बरों का चुनाव करते समय अपने पाठक वर्ग की रुचियों और जरूरतों का विशेष ध्यान रखते हैं।

10. नीतिगत ढांचा

अलग-अलग समाचार संगठनों की खबर के चयन और प्रस्तुति को लेकर एक निति होती है। इस निति का निर्धारण सम्पादक या newspaper का मालिक होता हैं।

News papers में प्रकाशित होने वाली प्रत्येक खबर या वैचारिक मंथन करने वाले विशिष्ट लेख तथा अग्रलेख फीचर, कहानी आदि में शीर्षक (title) होना जरुरी होता है। इस प्रकार समाचारों के शीर्षक खबर के सार-तत्व को इंगित करते हैं जिसे पढ़कर पाठक शीघ्र ही यह समझ लेता है की अमुक खबर का विवरण क्या हो सकता हैं और इस खबर का संबंद किस घटना या स्तिथि से हो सकता हैं।

इस प्रकार समाचार पत्र की मुख्य खबर जो पहले पेज पर प्रकाशित की जाती है के शीर्षक को पाठक को आकर्षित करने जैसा बनाते है क्योंकि किसी भी खबर या जैसे इस पोस्ट में शीर्षक का सबसे अधिक महत्त्व होता हैं।

समाचार की संरचना

समाचार संरचना की बात करें तो मुख्य रूप से तीन खंडो में विभाजित कर सकते हैं। पहले में इंट्रो होता है जिसमें 'क्या हुआ' के प्रश्न का उत्तर दिया जा सकता है जो क्या हुआ को स्पष्ट करता है। दूसरा में जो कुछ बचा उसे रखा जाता है। और अंत में समाचार को पूरा करने के लिए जो कुछ आवश्यक है उसे रखा जाता है।

इस तरह समाचार में सबसे पहले समाचार का 'इंट्रो' यानी इंट्रोडक्षन होता है। यह असली समाचार है जो चंद शब्दों में पाठकों को बताता है कि क्या घटना घटित हुई है। इसके बाद के पैराग्रा फ में इंट्रो की व्याख्या करनी होती है। इंट्रो में जिन प्रश्नों का उत्तर अधूरा रह गया है उनका उत्तर देना होता है। इसलिए समाचार लिखते समय इंट्रो के बाद व्याख्यात्मक जानकारी देना जरूरी होता है। इसके बाद विवरणात्मक या वर्णनात्मक जानकारियां दी जानी चाहिए। घटनास्थल का वर्णन करना, इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि यह घटना के स्वभाव पर निर्भर करता है कि विवरणात्मक जानकारियो का कितना महत्व है।

जैसे अगर कहीं कोई उत्सव हो रहा हो जिसमें अनेक सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रम चल रहे हों तो निश्चय ही इसका समाचार लिखते समय घटनास्थल का विवरण ही सबसे महत्वपूर्ण है। लेकिन अगर कोई राजनेता पत्रकार सम्मेलन करता है तो इसमें विवरण देने(पत्रकार सम्मेलन के माहौल के बारे में बताने) के लिए कुछ भी नहीं होता है। हां एक पत्रकार यह कर सकता है कि राजनेता जो कुछ भी कहा उसके बारे में पड़ताल कर सकता है कि इस पत्रकार सम्मेलन बुलाने का मकसद क्या था। यहां यह समाचार बन सकता है कि समाचार में कुछ छिपाया तो नहीं जा रहा है।

विवरण के बाद पांच डब्ल्यू और एक एच को पूरा करने के लिए आवश्यक होती है और जिन्हें समाचार लिखते समय पहले के तीन खंडों में शामिल नहीं किया जा सका। इसमें पहल े तीन खंडो से संबंधित अतिरिक्त जानकारियां दी जाती है। हर घटना को सही दिशा में पेश करने के लिए इसका पृष्ठभूमि में जाना भी आवश्यक होता है। पाठक भी इस तरह की किसी घटना की पृष्ठभूमि भी जानने के लिए इच्छा रखता है। जैसे कि अगर किसी नगर में असुरक्षित मकान गिरने से कुछ लोगों की मृत्यु हो जाती है तो यह भी प्रासंिगक ही होता है कि पाठकों को यह भी बताया जाए कि पिछले एक वर्ष में इस तरह की कितनी घटनाएं हो चुकी है और कितने लोग मरे हैं। प्रशासन द्वारा इस तरह की घटनाओं को रोकने के लिए क्या कदम उठाए गए और वे कहां तक सफल रहे हैं। और अगर सफल नहीं हुए तो क्यों? आदि।

इस तरह कहा जा सकता है कि समाचार संरचना में यह क्रम होता है-इंट्रो, व्याख्यात्मक जानकारियां, विवरणाात्मक जानकारियां, अतिरिक्त जानकारियां और पृष्ठभूमि।

छ ‘क’ कार

समाचार के अर्थ में हमने देखा समाचार का स्वरूप क्या है। उसके प्रमुख तत्वों ं को आसानी से समझा जा सकता है। शुष्क तथ्य समाचार नहीं बन सकते पर जो तथ्य आम आदमी के जीवन आरै विचारों पर प्रभाव डालते हैं उसे पसंद आते हैं और आंदोलित करते हैं, वे ही समाचार बनते हैं। समाचार के इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए समाचार में छह तत्वों का समावेश अनिवार्य माना जाता है । ये हैं- क्या, कहां, कब, कौन, क्यो और कैसे।

अंग्रेजी में इन्हें पांच ‘डब्ल्यू’, हू, वट, व्हेन, व्हाइ वे्ह अर और एक ‘एच’ हाउ कहा जाता है। इन छह सवालों के जवाब में किसी घटना का हर पक्ष सामने आ जाता है लेकिन समाचार लिखते वक्त इन्हीं प्रश्नों का उत्तर तलाशना आरै पाठको तक उसे उसके संपूर्ण अर्थ में पहुंचाना सबसे बड़ी चुनौती का कार्य है। यह एक जटिल प्रक्रिया है।

1.क्या - क्या हुआ? जिसके संबंध में समाचार लिखा जा रहा है।
2.कहां - कहां? ‘समाचार’ में दी गई घटना का संबंध किस स्थान, नगर, गांव प्रदेश या देश से है।
3.कब - ‘समाचार’ किस समय, किस दिन, किस अवसर का है।
4.कौन - ‘समाचार’ के विषय (घटना, वृत्तांत आदि) से कौन लोग संबंधित हैं।
5.क्यों - ‘समाचार’ की पृष्ठभूमि।
6.कैसे - ‘समाचार’ का पूरा ब्योरा।

यह छह ककार (’’क’’ अक्षर से शुरू होनेवाले छ प्रश्न) समाचार की आत्मा है। समाचार में इन तत्वो का समावेश अनिवार्य है।

समाचार लेखन की प्रक्रिया

उल्टा पिरामिड सिद्धांत समाचार लेखन का बुनियादी सिद्धांत है। यह समाचार लेखन का सबसे सरल, उपयोगी और व्यावहारिक सिद्धांत है। समाचार लेखन का यह सिद्धांत कथा या कहनी लेखन की प्रक्रिया के ठीक उलट है। इसमें किसी घटना, विचार या समस्या के सबसे महत्वपूर्ण तथ्यों या जानकारी को सबसे पहले बताया जाता है, जबकि कहनी या उपन्यास में क्लाइमेक्स सबसे अंत में आता है। इसे उल्टा पिरामिड इसलिये कहा जाता है क्योंकि इसमें सबसे महत्वपूर्ण तथ्य या सूचना सबसे पहले आती है जबकि पिरामिड के निचले हिस्से में महत्वपूर्ण तथ्य या सूचना होती है। इस शैली में पिरामिड को उल्टा कर दिया जाता है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण सूचना पिरामिड के सबसे उपरी हिस्से में होती है आरै घटते हुये क्रम में सबसे कम महत्व की सूचनाये सबसे निचले हिस्से में होती है।

समाचार लेखन की उल्टा पिरामिड शैली के तहत लिखे गये समाचारो के सुविधा की दृष्टि से मुख्यत: तीन हिस्सों में विभाजित किया जाता है-मुखड़ा या इंट्रो या लीड, बाडी और निष्कर्ष या समापन। इसमें मुखड़ा या इटं्रो समाचार के पहले आरै कभी-कभी पहले और दूसरे दोनों पैरागा्रफ को कहा जाता है। मुखड़ा किसी भी समाचार का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होता है क्योंकि इसमें सबसे महत्वपूर्ण तथ्यों आरै सूचनाओं को लिखा जाता है। इसके बाद समाचार की बाडी आती है, जिसमें महत्व के अनुसार घटते हुये क्रम में सूचनाओं और ब्यौरा देने के अलावा उसकी पृष्ठभूमि का भी जिक्र किया जाता है। सबसे अंत में निष्कर्ष या समापन आता है।

समाचार लेखन में निष्कर्ष जैसी कोई चीज नहीं होती है और न ही समाचार के अंत में यह बताया जाता है कि यहां समाचार का समापन हो गया है।

1. मुखड़ा या इंट्रो या लीड - उल्टा पिरामिड शैली में समाचार लेखन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू मुखड़ा लेखन या इंट्रो या लीड लेखन है। मुखड़ा समाचार का पहला पैराग्राफ होता है जहां से कोई समाचार शुरु होता है। मुखड़े के आधार पर ही समाचार की गुणवत्ता का निर्धारण होता है। एक आदर्श मुखड़ा में किसी समाचार की सबसे महत्वपूर्ण सूचना आ जानी चाहिये और उसे किसी भी हालत में 35 से 50 शब्दो से अधिक नहीं होना चाहिये किसी मुखड़े में मुख्यत: छह सवाल का जवाब देने की कोशिश की जाती है - क्या हुआ, किसके साथ हुआ, कहां हुआ, कब हुआ, क्यों और कैसे हुआ है। आमतौर पर माना जाता है कि एक आदर्श मुखड़े में सभी छह ककार का जवाब देने के बजाये किसी एक मुखड़े को प्राथमिकता देनी चाहिये। उस एक ककार के साथ एक-दो ककार दिये जा सकते हैं।

2. बाडी - समाचार लेखन की उल्टा पिरामिड लेखन शैली में मुखड़े में उल्लिखित तथ्यों की व्याख्या और विश्लेषण समाचार की बाडी में होती है। किसी समाचार लेखन का आदर्श नियम यह है कि किसी समाचार को ऐसे लिखा जाना चाहिये, जिससे अगर वह किसी भी बिन्दु पर समाप्त हो जाये तो उसके बाद के पैराग्राफ में एसे ा कोई तथ्य नहीं रहना चाहिय,े जो उस समाचार के बचे हुऐ हिस्से की तुलना में ज्यादा महत्वपूर्ण हो। अपने किसी भी समापन बिन्दु पर समाचार को पूर्ण, पठनीय और प्रभावशाली होना चाहिये। समाचार की बाडी में छह ककारो में से दो क्यो और कैसे का जवाब देने की कोशिश की जाती है। कोई घटना कैसे और क्यो हुई, यह जानने के लिये उसकी पृष्ठभूमि, परिपेक्ष्य और उसके व्यापक संदभेर्ं को खंगालने की कोशिश की जाती है। इसके जरिये ही किसी समाचार के वास्तविक अर्थ और असर को स्पष्ट किया जा सकता है।

3. निष्कर्ष या समापन - समाचार का समापन करते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि न सिर्फ उस समाचार के प्रमुख तथ्य आ गये हैं बल्कि समाचार के मुखड़े और समापन के बीच एक तारतम्यता भी होनी चाहिये समाचार में तथ्यो और उसके विभिन्न पहलुओं को इस तरह से पेश करना चाहियें कि उससे पाठक को किसी निर्णय या निष्कर्ष पर पहुंचने में मदद मिले।

4. भाषा और शैली - पत्रकार के लिए समाचार लेखन और संपादन के बारे में जानकारी होना तो आवश्यक है। इस जानकारी को पाठक तक पहुंचाने के लिए एक भाषा की जरूरत होती है। आमतौर पर समाचार लोग पढ़ते हैं या सुनते-देखते हैं वे इनका अध्ययन नहीं करते। हाथ में शब्दकोष लेकर समाचारपत्र नहीं पढ़े जाते। इसलिए समाचारों की भाषा बोलचाल की होनी चाहिए। सरल भाषा, छोटे वाक्य और संक्षिप्त पैराग्राफ। एक पत्रकार को समाचार लिखते वक्त इस बात का हमेशा ध्यान रखना होगा कि भले ही इस समाचार के पाठक/उपभेक्ता लाखो हों लेकिन वास्तविक रूप से एक व्यक्ति अकले े ही इस समाचार का उपयोग करेगा।

इस दृष्टि से जन संचार माध्यमों में समाचार एक बड़े जन समुदाय के लिए लिखे जाते हैं लेकिन समाचार लिखने वाले को एक व्यक्ति को केद्रं में रखना होगा जिसके लिए वह संदेश लिख रहा है जिसके साथ वह संदेशों का आदान-प्रदान कर रहा है। फिर पत्रकार को इस पाठक या उपभेक्ता की भाषा, मूल्य, संस्कृति, ज्ञान और जानकारी का स्तर आदि आदि के बारे में भी मालूम होना ही चाहिए। इस तरह हम कह सकते हैं कि यह पत्रकार और पाठक के बीच सबसे बेहतर संवाद की स्थिति है। पत्रकार को अपने पाठक समुदाय के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए। दरअसल एक समाचार की भाषा का हर शब्द पाठक के लिए ही लिखा जा रहा है और समाचार लिखने वाले को पता होना चाहिए कि वह जब किसी शब्द का इस्तेमाल कर रहा है तो उसका पाठक वर्ग इससे कितना वाकिफ है और कितना नहीं।

समाचार के प्रकार

1.स्थानीय समाचार
2.प्रादेशिक या क्षेत्रीय समाचार
3.राष्ट्रीय समाचार
4.अंतर्राष्ट्रीय समाचार
5.विशिष्ट समाचार
6.व्यापी समाचार
7.डायरी समाचार
8.सनसनीखेज समाचार
9.महत्वपूर्ण समाचार
10.कम महत्वपूर्ण समाचार
11.सामान्य महत्व के समाचार
12.पूर्ण समाचार
13.अपूर्ण समाचार
14.अर्ध विकसित समाचार
15.परिवर्तनशील समाचार
16.बड़े अथवा व्यापी समाचार
17.सीधे समाचार
18.व्याख्यात्मक समाचार
19.विषय विशेष समाचार

विषय विशेष समाचार

विषय विशष के आधार पर हम समाचारो को निम्नलिखत प्रकारो में विभाजित कर सकते हैं -

1.राजनीतिक समाचार
2.अपराध समाचार
3. साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचार
4.खेल-कूद समाचार
5.विधि समाचार
6.विकास समाचार
7.जन समस्यात्मक समाचार
8.शैक्षिक समाचार
9. आर्थिक समाचार
10. स्वास्थ्य समाचार
11.विज्ञापन समाचार
12.पर्यावरण समाचार
13. फिल्म-टेलीविजन (मनोरंजन) समाचार,
14.फैशन समाचार
15.सेक्स समाचार
16.खोजी समाचार

अस्वीकरण निम्नलिखित वीडियों विभिन्न पुस्तकों , मीडिया , इंटरनेट अंतरिक्ष , आदि से एकत्र किए गए शोध और केस स्टडीज पर आधारित है । संतोषकुमार यशवंतकर और निर्माता वीडियो में निहित जानकारी की सटीकता , सामग्री , पूर्णता , वैधता या विश्वसनीयता के लिए किसी भी जिम्मेदारी या दायित्व को स्वीकार नहीं करते हैं । वीडियो पूरी तरह से शैक्षिक उद्देश्यों के लिए बनाया गया है और किसी व्यक्ति , व्यक्तियों , संस्था , कंपनी या किसी के शरीर को नुकसान पहुंचाने , चोट पहुंचाने या बदनाम करने के इरादे से नहीं बनाया गया है । इस वीडियो का उद्देश्य किसी भी धर्म , समुदायों या व्यक्तियों की अफवाहों को फैलाना , अपमानित करना या उन्हें चोट पहुंचाना या किसी व्यक्ति (जीवित या मृत) के प्रति असहमति पहुंचाना नहीं है , दर्शक को हमेशा अपना परिश्रम करना चाहिए और जो कोई भी इसमें शामिल होना चाहता है वीडियो में इसके लिए पूरी जिम्मेदारी लेता है । साथ ही , यह उनके स्वयं के जोखिम और परिणामों पर किया जाता है । इस वीडियो में शामिल सामग्री किसी भी क्षेत्र में सेवाओं या प्रशिक्षित पेशेवरों के लिए प्रतिस्थापन या प्रतिस्थापन नहीं कर सकती है , लेकिन वित्तीय , चिकित्सा , मनोवैज्ञानिक या कानूनी मामलों तक सीमित नहीं है । डॉ । संतोषकुमार यशवंतकर और निर्माता वीडियो पर आधारित किसी भी कार्रवाई के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उत्पन्न होने वाले किसी भी प्रत्यक्ष , अप्रत्यक्ष , निहित , दंडात्मक , विशेष , आकस्मिक , या अन्य के लिए जिम्मेदारी नहीं लेते हैं । डॉ । संतोषकुमार यशवंतकर और वीडियो के निर्माता किसी भी तरह के परिवाद , निंदा या किसी अन्य प्रकार के दावे या किसी भी प्रकार के दावे को स्वीकार करते हैं । दर्शकों को विवेक की सलाह दी जाती है शर्तें लाग करें ।

इस व्हिडियों / PPT का उदेश्य केवल अध्यापन के लिए है, न कि प्रसिद्धी पाने के लिए। इसका समग्र श्रेय सभी महानुभवों को जाता है जिन-जिनकी सामग्री का उपयोग यह बनाने के लिए हुआ है। मैं उन समस्तजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हुँ जिनकी सामग्री का उपयोग यह व्हिडियों / PPT के लिए हुआ है। यह मेरी कोई मौलिक उपलब्धी नहीं है और न ही कोई सृजनात्मकता। इस का उदेश्य केवल और केवल छाञों तक पहुँचाना हैं। इससे किसीके दिल को प्रत्यक्ष या परोक्षरुप से कोई ठेस या आहत पहुँचती है तो मैं उसके लिए क्षमाप्रार्थी हुँ - आपका प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S

ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI

जय भवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ, गेवराई संचलित (कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी ता.गेवराई जि.बीड)

प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर